सत्यसन्ध *Adj.* (BAH. e सत्य verus et सन्धा fides, promissum) qui vera promissa habet, qui stat promissis (*cf.* स्थिरसङ्गर). N. 12.56. SA. 1.2.

सत्र v. सत्त्र.

1. सद् 1. vel 6. P. (in tempp. special. substituit सीद्, part. pass. सन्न; in dial. Vêd. etiam cl. 2. unde सत्सि, v. praef. आ et cf. lith. *sêd-mi*) 1) sidere, considere, *sinken*; TROP. tabescere, fatiscere, perire. MAN. 4.191.: पङ्के गौर् इव सीदति; N. 9.26.: सीदन्त्य् अङ्गानि सर्वशः; 16.20.: न शोकेना 'पि सीदति; SA. 5.46.: सन्तो न सीदन्ति; R. Schl. II. 41.8.: पुत्रशोकाग्निसन्तप्तः ससाद गतचेतनः; MAH. 2.237.: राष्ट्रन् न सीदति; RAGH. 7.61.: सन्नशत्रुम्. 2) considere, sedem capere. RIGV. 13.9.: बर्हिः सीदन्तु «in stragulo considunto». 3) sedere, commorari. RIGV. 14.11.: अग्ने यज्ञेषु सीदसि. — *Caus.* 1) facere ut qu. sidat, cadat. DR. 8.29.: सादिताः सव्यसाचिना. 2) pulsare, percutere. RAGH. 7.41.: यैः सादिताः (schol. हताः) ... तान् एव सामर्षितया प्रत्याजघ्नुः. 3) ponere, collocare. RIGV. 15.4.: अग्ने देवाँ इहा 'वह सादया त्रिषु योनिषु «Agnis! deos huc advehe colloca *eos* in locis tribus». (Goth. *SAT* sedere, *sita, sat, sêtum*, v. gr. comp. 109[a]).1). 605.; *satja* pono = Caus. सादयामि, gr. comp. 109[a]).6); germ. vet. *SAZ* sedere, *sizu, saz, sâzumes*; *seziu* pono; lith. *sêd-mi* sedeo, *sodinu* planto; slav. *sjadû* consido, *καθίζομαι*, *sad-i-ti* plantare = Caus., v. gr. comp. 505.; lat. *sîdo*; *sedeo* nititur formâ Caus. सादयामि; gr. ἙΔ, *ἕδος*, *ἕζομαι*; hib. *suidhim* sedeo, *suidhiughaim* «I set, plant» = Caus. सादयामि, mutato य् in *gh*; *saidhe, saidhiste* «a seat». Vid. 2. सद्.)

c. अव sidere, tabescere, perire. SA. 5.47.: ना 'वसीदन्ति सन्तः; MAN. 4.187.: अवसीदन् अपि क्षुधा; HIT. 9.5.: अवसन्नायां रजन्याम्. *Etiam A.* MAH. 1.5184.: अवसीदेत. — *Caus.* facere ut qu. sidat, tabescat; deprimere. BH. 6.5.

c. अव praef. वि *id.* MAH. 3.713.823.

c. आ 1) considere, *s'asseoir.* RIGV. 26.4.: आ नो बर्हिः ... सीदन्तु «in nostro stragulo considunto». 2) sedere, assidere. RIGV. 12.4.: देवैर् आसत्सि बर्हिषि.

c. उत् sidere, perire. BH. 3.24.: उत्सीदेयुर् इमे लोकाः; SU. 2.22.: उत्सन्नोत्सवयज्ञाच बभूव वसुधा; BH. 1.44. — *Caus.* उत्सादयामि destruere, evertere. BH. 1.43.: उत्साद्यन्ते जातिधर्माः.

c. उत् praef. प्र *Caus.* i. q. Caus. praec. MAN. 9.261.

c. उत् praef. सम् *Caus. id.* MAH. 3.88321.

c. नि 1) considere, *s'asseoir, sich niedersetzen.* N. 10.5. SA. 5.5.6.: निषसाद महीतले. — निषण्ण (v. gr. 607.) adnisus, innisus *aliquâ re.* UR. 68.13.: नीपस्कन्धनिषण्णस् तिष्ठति. 2) A. sidere, tabescere. MAH. 3.333.: निषीदमानम्.

c. प्र 1) propendere, favere, propitium esse. BH. 11.25.: प्रसीद देवेश; 31.: देववर प्रसीद; N. 12.130.: तथा नः ... मणिभद्रः प्रसीदतु. — *Cum infin.* RAGH. 2.45. — प्रसन्न propitius. H. 1.45.: प्रसन्नास् ते देवाः; R. Schl. I. 18.17.: प्रसन्नो ऽस्मि ते. — *Etiam A.* MAH. 1.4700.: प्रसीदस्व. 2) clarum, serenum fieri. MAN. 6.67.: वारि प्रसीदति; RAGH. 3.14.: दिशः प्रसेदुर् मरुतो ववुः. TROP. serenum, hilarem, laetum, alacrem animo fieri, exhilarari. MAN. 2.54.: हृष्येत् प्रसीदेच. — प्रसन्न clarus, serenus. N. 12.112.: नदीम् प्रसन्नसलिलाम्. — *Caus.* P. propitium reddere. R. Schl. I. 66.24.: देवगणान् सर्वान् तपसा 'हम् प्रसादयम्; MAN. 11.205. A. 9.29. — ATM. supplicare, orare. BH. 11.44.: प्रसादये त्वाम् अहम्; SA. 1.16.: प्रसादयामास पुनः क्षिप्रम् एतद् भवत्व् इति (v. gr. 458.); MAH. 1.4325.: प्रसादये त्वाम्; 3.1629. R. Schl. II. 62.7. (Cf. hib. *forsuidhe* «steady, mild, meek», *forsanaim* «I shine», *fursan* «flame of fire», *fursain* «evident», *fursannaim* «I kindle», v. Pictet p. 91.)

c. प्र praef. अभि 1) *Caus.* propitium reddere, propitiare, placare. MAH. 3.14063. 2) exhilarare, consolari. R. Schl. II. 77.24.: सुमन्त्रश्च शत्रुघ्नम् उत्थाप्या 'भिप्रसाद्य च.

c. प्र praef. सम् favere, propitium esse. R. Schl. II. 26.34. — *Caus.* propitiare. MAH. 3.14039.